ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 107-109**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

डॉ0 जितेन्द्र कुमार भाजपेयी

समकालीन कहानी परिवेश और डॉ0 रामदरश मिश्र जी की कहानियाँ

असि0 प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, पं0 जवाहरलाल नेहरू कालेज बाँदा (उ0प्र0), भारत

Received- 13 .02. 2022, Revised- 17 .02. 2022, Accepted - 21.02.2022 E-mail: dr.jitendrabajpayee@gmail.com

सारांश: – समकालीन कहानी परिवेश और उस संदर्भ में मिश्र जी की कहानियों का मूल्यांकन किया गया है। मिश्र जी बिना किसी कहानी आन्दोलन में शामिल हुये अपने समय का यथार्थ चित्रित करते है। अन्य कहानीकारों से अलग हटकर इन्होंने नये ग्रामीण एंव शहरी परिवेश की तलाश की हैं। मिश्र जी जितना ग्रामीण जीवन जुडे हुए है उतना ही शहरी जीवन से भी। उनकी दृष्टि में किसी तरह का वैचारिक आग्रह नहीं है। वह स्वस्थ और सकारात्मक मानवीय संवेदना की दृष्टि है। अपने जाने–पहचाने परिवेशों को लेकर–नयी कहानी की प्रवृत्तियों से गुजरते हुए उन्होंने समकालीन सत्य को सहज शिल्प में मूर्त किया हैं। प्रेम या सेक्स की अपेक्षा मिश्र जी ने ग्रामीण या शहरी लोगों के जीवन के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक और विसंगतियों को अधिक उभारा है। उनकी अधिकतर कहानियाँ परिवेश की अन्तरंग पहचान देने के साथ–साथ सामाजिक, स्थितियों को धीरे–धीरे खोलती चलने वाली कहानियाँ है।

कुंजीभूत शब्द– समकालीन कहानी, परिवेश, मूल्यांकन, कहानी आन्दोलन, चित्रित, ग्रामीण एंव शहरी परिवेश।

समकालीन कहानीकार आज की परिपक्व स्थितियों को अपने रचना तंत्र से जोड़कर कभी एक नयी सामाजिकता के स्तर पर अपने जीवन के यथार्थ को व्यक्त करता है या कही एक अर्न्तद्वन्द्व की स्थिति से निकलने की छटपटाहट के साथ किसी एक मूल्य की तरफ भेदक नजरों से देखता है।

वातावरण एंव दृश्य योजना के बदले प्राकृतिक वातावरण में जीवंत ग्रामाचंल या शहरी जीवन के यथार्थ चरित्रों को पूरी सच्चाई के साथ चित्रांकित किया गया है। इन कहानियों में कल्पना में महल खड़ा नहीं दिखाई देता बल्कि समकालीन या स्वातंत्रयोत्तर, गाँव, शहर या कस्बे के जन–जीवन को ज्यों का त्यों रूपायित किया गया है। प्राकृतिक परिवेश में बिना फेर बदल किये वास्तविक वातावरण में कही शीत में ठिठुरते पात्र मिलते हैं, तो कही ताप में तपते या बर्षा से तरबतर पात्रों के पात्र जिन परिस्थितियों या जिस परिवेश में जी रहे है, उन्हें उन्ही, परिस्थितियों एवं ग्राम–नगर के दायरे में रखकर ही कथाकार कहानी–सृजन करता है।

लेखक (मिश्र जी) गाँव, शहर या किसी महानगर के परिवेश से जुड़कर वहाॅ की जिन्दगी जीते मानव की मनः स्थितियों और परिस्थियों का यथार्थ चित्रण करते हैं। इनका विश्वास है कि कहानी की चेतना परिवेश से जुड़े हुए व्यक्ति के मन की चेतना है।

डॉ0 रामदरश मिश्र जी की ''घर'' कहानी अपने आप में यथार्थ लिए मानव के दैनिक जीवन को उभारती है। बलराम अपने ही घर में पराया महसूस करता है। अनेको कष्ट झेलकर भी अपनी प्यारी जमीन से प्यार करता है। घर से तिरस्कृत होते हुए भी उस घर को अपना घर समझता है। जन्म भूमि, घर और खानदान से अटूट सम्बन्ध बताने वाली यह कहानी मानव में एक नयी चेतना को जागृत करती हैं। बलराम की दयनीय दशा एवं वेदना बोझिल जीवन को बड़ी सजीवता के साथ उभारा गया है।

नगर और ज्यादातर गाँव ही समकालीन कहानियों के परिवेश हैं इनमें मार्क्सवादी विचार धारा ओर गॉधीवादी दृष्टिकोण के साथ सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं पर अधिक भार है। डॉ0 रामदरश मिश्र जी समकालीन ग्राम परिवेश के जीते जागते यथार्थ को अपनी अनुभव दृष्टि से साकार किया है। शहरी परिवेश का जीवन यथार्थ चित्रित करने वाले कहानीकारों में डा0 रामदरश मिश्र जी का नाम उल्लेखनीय हैं। जिन्होंने अलग–अलग शहरी जीवन तथा ग्रामांचल को भी अपना अनुभव क्षेत्र बनाकर शहर या किसी गॉव का जीवन यथार्थ अपनी कहानियों में चित्रित किया हैं। इस प्रकार शहरी और ग्रामीण परिवेश को उभारती हुई समकालीन कहानी एक नये आयाम का सृजन करती है।

समकालीन कहानीकार समस्त मानव संवेदना को अपनी कहानियों में समेट लेना चाहता है। मूर्छित, संकुचित, दुखित, शोषितजनों में एक नयी चेतना और नया उत्साह भर देना चाहता है। वह परिवेशगत जीवन के गुप्त रहस्यों को उभार कर नकली एवं दंभी चेहरों को दुनिया के सामने पेश कर देना चाहता हैं। भले ही वे चेहरे उनके ही निकटम सगे सम्बन्धी या पारिवारिक सदस्य के ही क्यों ना हो। यथार्थ ग्रामाचंल के जीवन चित्र मिश्र जी कहानियों में खूब उभरे है। मिश्र जी ने नारी–जीवन के दर्द को बहुत गहराई से उभारा हैं। इनकी ''एक औरत एक जिन्दगी'' तथा ''अधुरी कहानी'' में देखने को मिलता है। दबी हुई नारी चेतना से प्रेरित हो, खेतो, खलिहानों और सिवानों में आने के लिए बेबस हैं और नारी पात्र ''भवानी''

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

हर परिस्थिति में डटकर मुकाबला करती हैं।

जन–जीवन के ऐसे अनेक चित्र मिश्र जी की कहानियों में मिलती है। समकालीन कहानियों का लक्ष्य विशेषकर गाँव और शहर की जिन्दंगी में परिर्वतन तथा मानवीय संवेदनाओं को उभारना है। ''सीमा'' कहानी में पन्द्रह वर्षीय अपंग सीमा अपनी बेबसी को दबाये जाल में फसी चिड़ियाँ की तरह फड़फड़ाती है। वह औरो के उपहास झेलकर अपनी समस्त लालसाओं को दबाकर रह जाती है।

डॉ0 रामदरश मिश्र जी की ''एक भटकी हुई मुलाकात'' तथा ''अधूरी कहानी'' अपने आप में काफी संवेदनात्मक, जीवन्त चैतन्य एंव यथार्थ पूर्ण लगती है। इसी संवेदना से भरी हुई ''कर्ज'' कहानी हैं। इसमें आर्थिक विषमताओं से जुझता हुआ भीखू आजीवन कर्ज से मुक्त होने के लिए तड़पता है। वह मरते दमतक गरीबों के लिए सरकार को अपना खून देता है। मानो अपने मानव जन्म का मूल्य चुकाता हैं। इसी प्रकार ''एक वह'' कहानी का बृद्ध ताऊ आजीवन घर परिवार के लिए जीता है। वह जीवन के अन्तिम समय तक ''गरीबी हटाओं'' का पोस्टर बनाकर सरकार के खोखले प्रचार पर जोरदार व्यंग्य कसता है। ''एक औरत एक जिन्दगी'' कहानी में विधवा भवानी अपनी कमजोरियों तथा बेबसियों के डर से लुप्त नहीं हो जाती है बल्कि घरेलू पर्दे को त्याग कर बाहर निकल पड़ती है और डटकर असामाजिक तत्वों का सामना करती है। भवानी खुद बैल बनकर खेतों में काम करती हैं पर किसी के सामने झुकती नही हैं। वह पर्दे में घुट–घुट कर जीवन जीने वाली नारियों के बाहर अपने के लिए प्रेरित करती है।

डॉ0 रामदरश मिश्र ने कहानी ''आदिम राग'' (बलियाँ) नामक कहानी में पराई सहानुभूति को व्यक्त किया है। ''बदलिया'' कहानी मे प्रो0 राजीव की शिष्या बेला अनुकूल परिस्थितियों में स्वयं ही उसकी तरफ खिंचती चली जाती है। ''इसी मनः स्थिति में बेला अपनी साधना लेकर मेरी जीवन में नये ढंग से प्रविष्ट हुई। उसने क्रमशः मेरी सहानुभूति और विकास को जीत लिया।

समकालीन सभी कहानियों का परिवेश एक सा नही होता हैं। गाँव और शहर के परिवेश की कहानियों में अमीर गरीब, शिक्षित–अशिक्षित किसान मजदूर की छूत–अछूत ऐसे सभी वर्गो का स्वरूप एक सा नही होता शहर की अपेक्षा गाँवों में आत्मीय भाव अधिक होता हैं। लेकिन शहर की भॉति गाँवों में भी राजनीति का बोल–बाला है। ग्रामीण कहानियों में लोगों के भरण–पोषण का आधार विशेष कर खेती हैं। जबकि शहरी परिवेश की कहानियों में जीवनाघर कलकारखाने है अथवा लोग मजदूरी–पताई करके पेट भरते है। इस प्रकार ये कहानियाँ शहरी, एंव ग्रामीण जीवन में अन्तर बताती चलती है। शहरी पात्र घर और आफिस तक ही सीमित होते हैं तथा घर और आफिस तक कोल्हू के बैल की तरह चक्कर लगाते रहते हैं जबकि ग्रामीण पात्र सर्वदा मुक्त होते हैं। उनका जीवन घर खेत, खलिहान आदि से लेकर नौकरी की खोज में शहरों तक फैला होता है। जिसके माध्यम से उनके रीति–रिवाज, बनते–बिगड़ते गाँव, प्रकृति पर्व–त्यौहार आदि सब कुछ अपने आप उभरते है। गवई जिन्दगी का मुख्य अंग प्रकृति होती है और वहॉ का जीवन प्रकृति के अनुकूल होता है, किन्तु शहरी जीवन के मानव प्रकृति को अपने अनुकूल बनाकर रहता है। ''एक और यात्रा'' (खाली घर) कहानी में लोग शहर से पुनः गाँव लौटते है, और गाँव को बदला हुआ पाते है। बचपन के साथी जैसे भूल गये हैं। किसी को फुर्सत ही नही किसी से बात करने की, सभी अपने कार्यो में रचे हुए जिन्दगी कसे जुझते है। ''सामने से सिर पर खाचाँ या कंधे पर कुदाली या खाद लिए चले जा रहे है और काम–ध ाम से निपट कर स्कूल भाग जा रहे है और रात को किसी दरवाजे पर कीर्तन गा रहें है मुझसे मिलने की न इन्हें फर्सत है न दिलचस्पी।

गाँव के लोगों में एक नयी उमंग जागृत हो गयी है। इसी के साथ–साथ राजनीतिक की घुसपैठ हैं। डॉ0 मिश्र जी की ''जमीन'' (एक वह) कहानी इसका सुन्दर उदाहरण है। डॉ0 मिश्र जी की ''दूरियाँ'' कहानी भी बदलते गॉव और शहर के लोगों के बीच की दूरी को मूर्तिमान करती है। ''सड़क'' कहानी बदलते जमाने तथा बनती–बिगड़ती जिन्दगी की यथार्थ कथा कहती है।

डॉ0 रामदरश मिश्र की ''एक वह'' (पराया शहर) ''दिनचर्या'' कहॉ जाओगें तथा आरम्भ आदि कहानियाँ शहरी परिवेश को उभारती हैं। ''पराया शहर'' कहानी में परदेशियों की दशा मकान के लिए दर–दर भटकना, प्रसव वेदना से पीड़ित पत्नी तथा भूखे बच्चों के साथ प्रोफेसर पंकज के परिवार का यह चित्र कितना दर्दनाक हो उठता है। ताँगे में बैठे भूखे बच्चे घर चलने के लिए चिल्लाते है, और मकान–मालिक घर देने से इनकार कर देता है। पति–पत्नी अपनी बेबसी को दबाये हुए चुप रहते हैं कहॉ जाये किसके घर पराये शहर में? ''तनु की देह अकड़ गई थी इस अवस्था में वह कितने घण्टों से आ रही हैं और आधा घण्टा तो तागे पर ही लग गया। तिस पर बेघर होने की पीड़ा उसे पेट में दर्द हो रहा था, कस कर दबाये थी''। इसी प्रकार ''दिनचर्या'' कहॉ जाओंगे तथा आरम्भ आदि कहानिया शहर के कसमसाते संघर्षमय जीवन को उभारती है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

मिश्र जी स्वयं लिखते है कि– ''मेरी कहानियों में अपने परिवेश के सामाजिक जीवन का यथार्थ ही अधिक व्यक्त हुआ है। वैसे मैं अपने गाँव–ज्वार से बाहर निकला तो एक शहर से दूसरे शहर तक घूमता रहा और इन नगरों के परिवेश में जितना जी सका, उतना उनका चित्रण भी अपनी कहानियों में किय। किन्तु लगता है मेरे भीतर सदा मेरा गॉव ही जीता रह। यह गाँव कछार का गाँव है दो नदियों के बीच घिरे हुए एक बहुत बड़े कछार अचंल का गाँव। इस गाँव के सारे अभाव, बिडम्बना, अवमानना, प्राकृतिक प्रकोप के आघात और जिजीविषा पूर्वक उनसे मनुष्य का संघर्ष, पाखंड को मैने देखा ही नही जिया भी है।

मेरे अनुभव में इस गाँव के माध्यम से सारे कछार की भयानक गरीबी और पीड़ा सामूहिक उल्लासों के स्वर, प्रकृति के विविध रंग, और गंध, तरह–तरह के अभिशप्त और उदास चेहरे बिम्ब बनकर पड़े हुए है। शायद इन्ही बिम्बों ने मुझे साहित्य की ओर ढकेला भी।

समकालीन कहानीकारों की अपनी अलग–अलग दृष्टि है, अपने निजी अनुभव क्षेत्र है। ''समकालीन कहानी आज के राजनीतिक, सामाजिक, औद्योगिक जीवन से उत्पन्न उन अनेक बाह्य परिस्थितियों को भी रचना प्रक्रिया में स्थान देती है तो मनुष्य की अस्मिता के संकट की अभिव्यकित के साथ उनसे उत्पन्न हीन–भावना या सुपर भावना को रूप देती है। इन सबसे अलग प्रकृति में ग्राम बोध को उजागर करने वाली डॉ0 रामदरश मिश्र जी की कहानियाँ है। जिनमें परिवेश का यथार्थ ग्रामाचंल की परिवर्तित मानसिकता के धरातल पर व्यक्त किया गया है। एक ऐसी यांत्रिक प्रक्रिया मनुष्य के सिर के ऊपर मंडरा रही है, जिसके दबाव के कारण वह न तो सम्बन्धों के मूल्यों की रक्षा कर पाता हैं और न उन्हें बिल्कुल अस्वीकार कर सकता हैं। यह यथार्थ और अनुभूति की प्रामाणिकता का स्वर डॉ0 रामदरश मिश्र जी कहानियों का मूल केन्द्र है। अपनी–अपनी पहचानी धरती के मानवीय जीवन की सही पहचान हमें डॉ0 रामदरश मिश्र जी की कहानियाँ कराती है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि समकालीन कहानी की दुनिया में डॉ0 रामदरश मिश्र जी की कहानियों का अपना रंग है। यह कहानियाँ ग्रामीण संवेदना से समृद्ध हैं गाँवों में आज जो परिवर्तन हो रहे है और जो अर्न्त विरोध दिखाई दे रहे है, वे कहानीकार मिश्र जी के मन को मथते रहते है। उन्हें गाँवो में शहरी दुनिया की यांत्रिकता की घुसपैठ अच्छी नही गलती किन्तु यथार्थ को नकारना किसी रचनाकार के लिए सम्भव नही होता। समकालीन जीवन के व्यापक अर्न्तविरोधों से कोई रचनाकार ''नई कहानी'' की रूढ़ियों से अलग रहते हुए भी मिश्र जी आज के जीवन यथार्थ को अनदेखी नही करते। इसलिए उनकी कहानियाँ भी समकालीनता को उसके अर्न्तविरोधों को मनुवय के आन्तरिक रिक्तता को व्यक्त करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 विनय–समकालीन काहनी समान्तर कहानी–पृ0सं0–22.
2. डॉ0 रामदरश मिश्र–आदिम राग (बदलियाँ) पृ0सं0–144.
3. डॉ0 रामदरश मिश्र–खाली घर (एक और यात्रा)।
4. डॉ0 रामदरश मिश्र–एक वह (पराया षहर) पृ0सं0–53.
5. भूमिका–इकसठ कहानियाँ।
6. डॉ0 विनय–समकालीन कहानी और समान्तर कहानी पृ0सं0–23.

*****